Max Marks: 80 **Date: 00. 00. 2022**
Time: 3 HRS **Seat No. ________**

S.S.C HINDI : SAMPLE PAPER -1 ANSWER

विभाग 1 ः गद्य ः 20 अंक

प्र.1 अ. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ः **(8)**

गोवा ! यह नाम सुनते ही सभी का मन तरंगायित हो उठता है और हो भी क्यों न यहाँ की प्रकृति आबोहवा और जीवनशैली का आकर्षण ही ऐसा है कि पर्यटक खुद–ब–खुद यहाँ खिंचे चले आते हैं। देश के एक कोने में स्थित होने के बावजूद यह छोटासा राज्य प्रत्येक पर्यटक के दिल की धडकन है। यही कारण है कि मैं भी अपने परिवार के साथ इंदौर से गोवा जा पहुँचा। खंडवा से मेरे साढू साहब भी सपरिवार हमारे साथ शामिल हो गए। 23 नवंबर को जब 'गोवा एक्सप्रेस' मडगाँव रुकी तो सुबह का उजास हो गया था। एक टैक्सी के हॉर्न ने मेरा ध्यान उसकी ओर खींचा और हम फटाफट उसमें बैठ गए। टैक्सी एक पतली सी सड़क पर दौड़ पड़ी। शीतल हवा के झोंकों से मन प्रसन्न हो गया और यात्रा की सारी थकान मिट गई। मैं सोचने लगा कि पर्यटन का भी अपना ही आनंद है। जब हम जीवन की कई सारी समस्याओं से जूझ रहे हों तो उनसे निजात पाने का सबसे अच्छा तरीका पर्यटन ही है। बदले हुए वातावरण के कारण मन तरोताजा हो जाता है तथा शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।

1. **उत्तर लिखिए ः** **2**

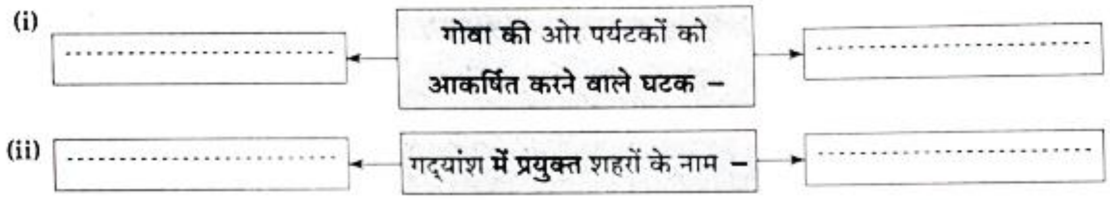

उ **(i)**

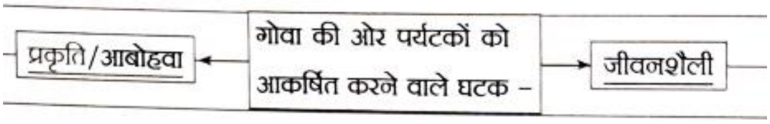

(ii)

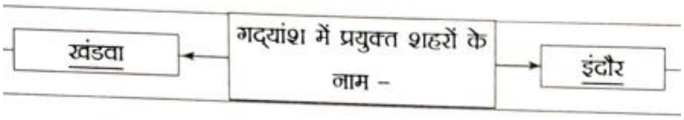

2 **एक – दो शब्दों में उत्तर लिखिए ः** **2**

(i) लेखक का ध्यान अपनी ओर खींचने वाला - ____________________

(ii) समस्याओं से निजात पाने का सबसे अच्छा तरीका - _______________

(iii) लेखक के सफर का साधन - _______________________________

(iv) लेखक के मडगाँव में पहुचने का दिन - ______________

उ (i) टैक्सी का हॉर्न (ii) पर्यटन

(iii) रेल , गोवा एक्सप्रेस (iv) 23 नवंबर

3. **(1)** गद्यांश में प्रयुक्त दो प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए ः **1**

(i) ---------------- (ii) --------------------

उ (i) तरंगायित (ii) प्रत्येक

(2) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए: 1

(i) अप्रसन्न X प्रसन्न

(ii) बुरा X अच्छा

4. 'आनंद प्राप्ति का साधन : पर्यटन' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए। 2

उ. पर्यटन से हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। किसी स्थान के बारे में पढ़कर जानकारियाँ प्राप्त करने और उसे प्रत्यक्ष देखने में अंतर होता है। यह सुख हमें पर्यटन से प्राप्त होता है। पर्यटन से हमें भिन्न–भिन्न प्रदेशों और देशों के प्रसिद्ध स्थलों एवं धरोहरों को देखने का अवसर मिलता है। उनकी संस्कृतियों उनके रहनसहन और रीति रिवाजों को प्रत्यक्ष देखने का मौका मिलता है। इससे हम एक – दूसरे के करीब आते हैं। वहाँ हुए विकास कार्यों से प्रेरणा लेते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन से अपने रोजमर्रा के कार्यों से कुछ दिन दूर रहने और निश्चित होकर देश – दुनिया को देखने उससे कुछ सीखने और अपने आप में सुधार करने तथा तनावों से मुक्त रहने का अवसर मिलता है। इस तरह पर्यटन निश्चित रूप से आनंद प्राप्ति का एक सुंदर और मनोरंजक साधन है।

प्र.1 आ.. निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 8

प्रिय सरोज़

तुम्हारा 16 से 18 तक लिखा हुआ पत्र आज अभी मिला। इस महीने में मैंने इन तारीखों को पत्र लिखे हैं - तारीख 1, 9, 15 और चौथा आज लिख रहा हूँ। अब तुमको हर सप्ताह में लिखूँगा ही । तुम्हारी तबीयत कमजोर है तब तक चिरंजीव रेहाना मुझे पत्र लिखेगी तो चलेगा। मुझे हर सप्ताह एक पत्र मिलना चाहिए। पूज्य बापू जी चाहते हैं तो हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए मुझे अपनी सारी शक्ति उर्दू सीखने के पीछे खर्च करनी चाहिए। तुमको मैंने एक संदेश भेजा था कि तुम उर्दू लिखना सीखो। लेकिन अब तो मेरा एक ही संदेश है- पूरा आराम लेकर पूरी तरह ठीक हो जाओ।

तारों के नक्शे बनाने के लिए कंपास बॉक्स भी मँगाकर रखा है। लेकिन अब तक कुछ हो नही पाया है।

मैंने अपने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए हैं। सादे क्रोटन को ही रहने दिया है।

सबको काका का सप्रेम शुभाशीष
('काका कालेलकर ग्रंथावली ' से)

1. **संजाल पूर्ण कीजिए :** 2

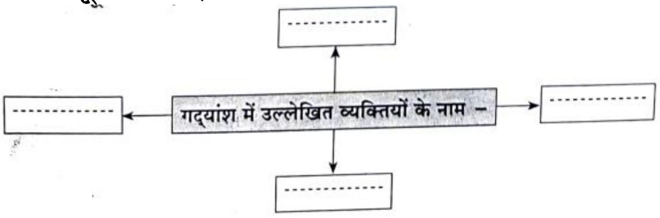

उ

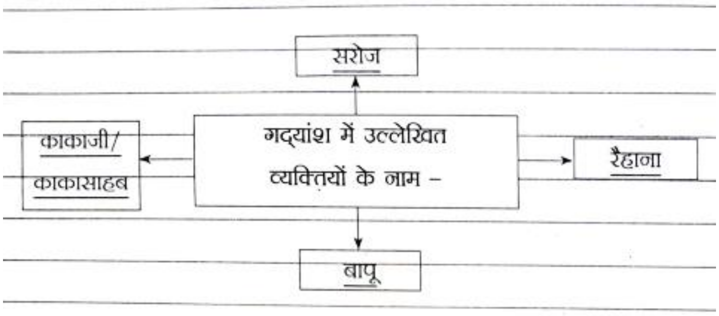

2. **निम्नलिखित कथन पढ़कर सत्य अथवा असत्य पहचानकर लिखिए:** 2

(i) पत्र रैहाना को लिखा गया है। __________

(ii) सरोज की तबीयत कमजोर है। __________

(iii) काकासाहब ने अपने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए हैं। ____________

(iv) काकासाहब ने सरोज को पत्र लिखा है । ____________

उ (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

3. 1. **निम्नलिखित शब्दसमूहों के लिए एक शब्द लिखिए:** **1**

(i) सात दिनों का समूह ________________

(ii) 28, 29, 30, 31 दिनों का समूह ________________

उ (i) सप्ताह (ii) महीना

2. **निम्नलिखित शब्दों के लिए पर्यायवाची शब्द लिखिए:** **1**

(i) पत्र = ____________

(ii) तारीख = ____________

उ. पत्र = चिठ्ठी / खत

तारीख = दिनांक / तिथि

4. अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने का सशक्त माध्यम पत्र है' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए। **2**

उ. मनुष्य अपनी भावनाओं को विभिन्न माध्यमों के द्वारा दूसरों तक पहुँचाता है। पत्र मनुष्य की भावनाओं को लिखित रूप में किसी व्यक्ति तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। हालाँकि टेलीफोन और मोबाइल फोन लोगों की भावनाओं को शीघ्र दूसरों तक पहुँचाने के साधन बन गए हैं। पर पत्रों की उपयोगिता आज भी पहले जैसी ही बरकरार है। इन्हें लोग बार बार पढ़ते और सँजोकर भी रखते हैं। पत्र बहुत कीमती होते हैं। समय बीत जाने पर कुछ पत्र इतिहास की घटनाएँ बन जाते हैं। जिन्हें अन्य लोग भी पढ़ना चाहते हैं। जवाहरलाल नेहरू द्वारा अपनी पुत्री इंदिरा को लिखे हुए पत्र 'पिता के पत्र पुत्री के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसी तरह अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा अपने बेटे के शिक्षक को लिखा गया एक पत्र भी बहुत प्रसिद्ध है। इस तरह पत्र के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रभावी ढंग से एक– दूसरे तक पहुँचाने के उपर्युक्त पत्र जीते –जागते प्रमाण हैं।

प्र. 1. (इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **4**

1. उत्तर लिखिए : **2**

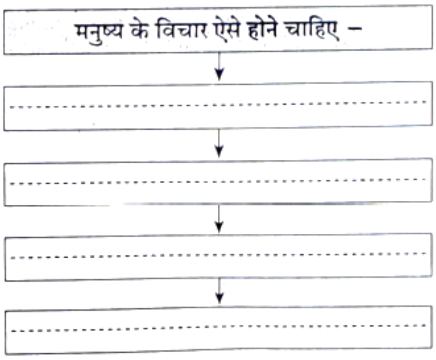

उ.

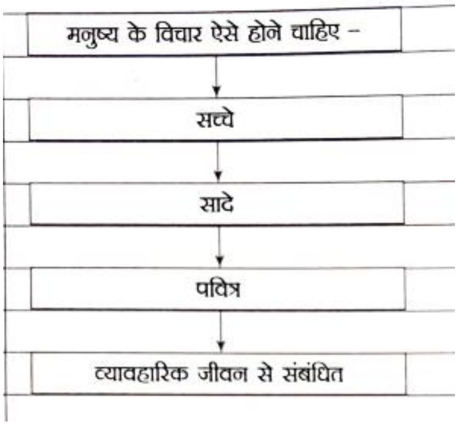

2. 'साधा जीवन, उच्च विचार' इस विषय पर अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए। 2

उ. संसार मे दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे जो वैभवसंपन्न लोग होते हैं और अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए, दिखावे के लिए आडंबरपूर्ण जीवन जीते हैं। वे प्रदर्शनप्रिय होते हैं। दूसरे वे जो सादगीपूर्ण जीवन जीते हैं, पर उनके विचार बहुत ऊँचे होते हैं। सादगी एक दुर्लभ गुण है। सादगीपूर्ण जीवन जीने वाला व्यक्ति अपने आप में संयम का विकास कर सकता है। इससे उसमें अनेक सद्गुण अपने आप आ जाते हैं। सादा जीवन जीने वाला व्यक्ति एक संत की भाँति जीता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सादा जीवन और उच्च विचार के जीते-जागते मिसाल हैं। उनके शरीर पर एक धोती के अलावा अन्य कोई वस्त्र नहीं रहता था। वे अपने सभी काम स्वयं करते थे। किंतु उनके विचार बहुत ऊँचे थे। आज सारा विश्व गांधी जी की सादगी और उनके उच्च विचारों का कायल है। जो व्यक्ति 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले दुर्लभ गुण को अपने जीवन में उतार लेता है, वह प्रशंसनीय एवं दूसरों का आदर्श बन जाता है।

विभाग 2 ः पद्य ः 12 अंक

प्र 2.(अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ः 6

फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजै अणहद की झनकार रे ।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै रोम– रोम रणकार रे ।
सील संतोख की केसर घोली प्रेम- प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर बरसत रंग अपार रे ।
घट के पट सब खोल दिए हैं लोकलाज सब डार रे ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कँवल बलिहार रे ।

1. **उत्तर लिखिए ः** 2

(i)

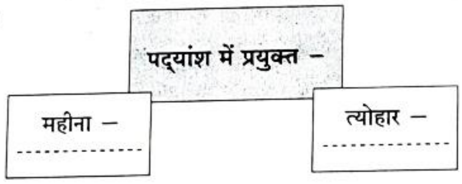

(ii)

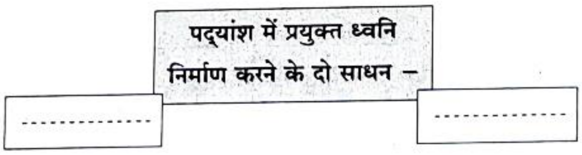

उ. (i) महीना – फागुन , त्योहार – होली / होरी

(ii) करताल , पखावज

2. **पद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :** 2

(i) ऐसे दो शब्द जिनका वचन परिवर्तन से रूप नहीं बदलता :

(1) .... (2) ....

उ. (1) दिन (2) चरण ।

(ii) ऐसे शब्द जिनका अर्थ निम्न शब्द हों :

(1) आकाश = ------------------

(2) कमल = -----------------

उ. (1) अंबर (2) कँवल

3. **उपर्युक्त पद्यांश की किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ 25 से 30 शब्दों में लिखिए।** 2

उ. हे मेरे मन फागुन मास में होली खेलने का समय अति अल्प होता है। अतः तू जी भरकर होली खेल। अर्थात मानव जीवन अस्थायी है इसलिए भगवान कृष्ण से पूर्ण रूप से प्रेम कर ले। जिस प्रकार होली के उत्सव में नाच आदि का आयोजन होता है, उसी प्रकार कृष्णप्रेम में मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो करताल पखावज आदि बज रहे हैं और अनहद नाद का स्वर सुनाई दे रहा है जिससे मेरा हृदय बिना स्वर और राग के अनेक रागों का आलाप करता रहता है। मेरा रोमरोम भगवान कृष्ण के प्रेम के रंग में डूबा रहता है। मैंने अपने प्रिय से होली खेलने के लिए शील और संतोष रूपी केसर का रंग घोला है। मेरा प्रियप्रेम ही होली खेलने की पिचकारी है।

प्र.2 आ. निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गईं सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 6

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई
प्रकृति हुई द्युतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई
पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते
निशा काल में लोग घरों मे निज निज जा सोते हैं
बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं
अर्धरात्रि को घर से कोई जो आँगन को आता,
शून्य गगन मंडल को लख यह मन में है भय पाता

1. उचित जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए: 2

"अ'	'आ'
(i) प्रकृति	ताल
(ii) अवनि	द्युतिहीन
(iii) पद्मदल	नृप
(iv) अन्यायी	कुंझटिका

उ.

"अ'	'आ'
(i) प्रकृति	द्युतिहीन
(ii) अवनि	कुंझटिका
(iii) पद्मदल	ताल
(iv) अन्यायी	नृप

2. सूचनाओं के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए : 2

(i) लिंग पहचानकर लिखिए :

शब्द	लिंग
(i) नृप	....
(ii) प्रकृति	....

उ. (i) नृप - पुल्लिंग (ii) प्रकृति - स्त्रीलिंग

(ii) वचन परिवर्तन कीजिए :

(1) ऋतु .... (2) घर ....

उ. (1) ऋतु - ऋतुएँ (2) घर - घर।

3. उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए। 2

उ. कवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु के भाई हेमंत का समय बीत गया है। अब शिशिर ऋतु का आगमन हो गया है। शिशिर ऋतु की कंपा देने वाली ठंड के कारण प्रकृति की आभा खत्म हो गई है और वह कांति रहित हो गई है। पृथ्वी पर धुँधलका छा गया है।
ठंड के कारण खूब बर्फ गिर रही है। इससे तालाबों में खिले हुए कमल के फूलों को बहुत कष्ट हो रहा है। कविं कहते हैं कि यह कष्ट कुछ उसी तरह का है जैसे किसी निर्दयी और अन्यायी राजा के तरहतरह के दंड़ों से उसके राज्य की प्रजा दुखी होती है।

विभाग 3 : पूरक पठन : 8 अंक

प्र. 3. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ः 4

मकान पर मकान

जिस गली में आजकल रहता हूँ वहाँ एक आसमान भी है लेकिन दिखाई नहीं देता। उस गली में पेड़ भी नहीं हैं। न ही पेड़ लगाने की गुंजाइश ही है। मकान ही मकान हैं। इतने मकान कि लगता है मकान पर मकान लदे हैं। लंद – फंद मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़ जो एक सँकरी गली में फँस गई और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। जिस मकान में रहता हूँ उसके बाहर झाँकने से 'बाहर' नहीं सिर्फ दूसरे मकान और एक गंदी व तंग गली दिखाई देती है। चिड़ियाँ दिखती हैं लेकिन पेड़ों पर बैठीं या आसमान में उड़ती हुई नहीं। बिजली या टेलीफोन के तारों पर बैठी मगर बातचीत करतीं या घरों के अंदर यहाँ वहाँ घोंसले बनाती नहीं दिखतीं। उन्हें देखकर लगता मानो वे प्राकृतिक नहीं रबड़ या प्लास्टिक के बने खिलौने हैं जो शायद ही इधरउधर फुदक सकते हों या चूँ –चूँ की आवाजें निकाल सकते हों।

मैं ऐसी सँकरी और तंग गली में मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़ से बिजली या टेलीफोन के तारों से उलझे आसमान से एवं हरियाली के अभाव से जूझते अपने मुहल्ले से बाहर निकलने की भारी कोशिश में हूँ ।

1. **उत्तर लिखिए ः** 2

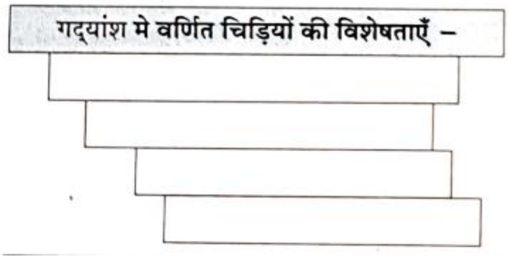

उ.

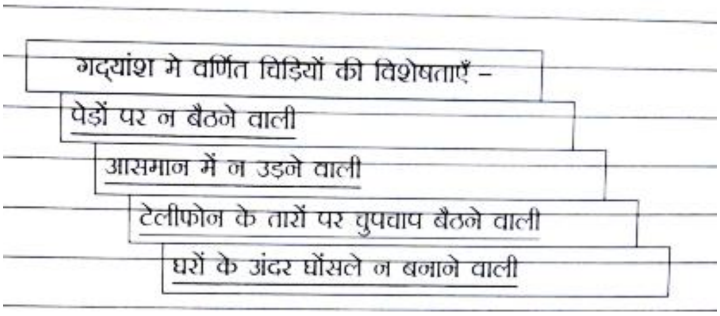

2. 'बढ़ती हुई जनसंख्या का मनुष्य जीवन पर प्रभाव' के बारे में आपके विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए । 2

उ. आज लगभग सभी देशों की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। यह जनसंख्या वृद्धि आज संसार के समक्ष एक समस्या बन गई है। सभी देशों के संसाधन सीमित हैं और बढ़ी हुई जनसंख्या की माँग विशाल है जिसकी पूर्ति करना संभव नहीं है। इसी का परिणाम है कि आज लोगों के सामने बेकारी की समस्या उत्पन्न हो गई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि पर आधारित लोग परेशान हैं। खेती योग्य जमीन बँटती जा रही है। अब वह इतने लोगों को रोटी देने में असमर्थ हो गई है। गाँवों की आबादी शहरों पर आ पड़ा है। यहाँ शहरों में बेकारी की समस्या है। यहाँ भी लोग रोटी कपड़ा मकान की समस्याओं से जूझ रहे हैं। लोग गंदी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर हैं। न इतने लोगों के लिए ढंग की शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध हो पा रही है और न ही चिकित्सा व्यवस्था। बढ़ती जनसंख्या ने देश की अर्थव्यवस्था बिगाड़ दी है। इस पर अंकुश लगाकर ही इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। तभी मनुष्य के जीवन स्तर में भी सुधार हो पाएगा।

3 **निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ः** 4

यों आप खफा क्यों होती हैं टंटा काहे का आपस में।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़– चढ़कर क्या रक्खा इसमें ।
झगड़े से न कुछ हासिल होगा रख देंगे बातें उलझा के ।
बस बात पते की इतनी है ध्रुव या रजिया भारत माँ के ।
भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो – दो पहिये अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये ।
हम उस धरती की संतति हैं . . . .

1. उपर्युक्त **पद्यांश** में उल्लेखित स्त्री–पुरुष समानता दर्शाने वाली पंक्तियाँ चुनकर लिखिए : **2**

उ. (i) बस बात पते की इतनी है ध्रुव या रजिया भारत माँ के

(ii) भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो – दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये

2. 'झगड़े से कुछ हासिल नहीं होता' अपने विचार 25 से 30 शब्दों में लिखिए । **2**

उ. झगड़े से कुछ हासिल नहीं होता

किसी बात पर होने वाली कहा– सुनी या विवाद को आमतौर पर झगड़ा कहा जाता है। झगड़े से समस्या सुलझने के बजाय और उलझ जाती है। मुख्य मुद्दा धरा रह जाता है और झगड़ा प्रमुख हो जाता है। कभीकभी तो झगड़े में लोगों की जान पर भी बन आती है। इसके परिणामस्वरूप लोगों में मारामारी और हत्या तक हो जाती है। पर समस्या वैसी की वैसी बनी रहती है बल्कि उसमें और इजाफा हो जाता है। झगड़े के परिणामस्वरूप पीढ़ी पीढ़ी तक दुश्मनी बनी रहती है। इसलिए झगड़े को भूलकर आपस में बातचीत के माध्यम से ही किसी समस्या का हल निकालने की बात सोचनी चाहिए। अतः किसी समस्या का हल निकालने का सही मार्ग झगड़ा नहीं बल्कि शांतिपूर्ण माहौल में आपस में बातचीत कर समझौता करना है।

-

विभाग 4 : भाषा अध्ययन (व्याकरण) : 14 अंक

प्र 4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1. **अधोरेखांकित शब्द का शब्द भेद पहचानकर लिखिए:** **1**

अब मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ ।

उ. मैं – सर्वनाम

2. **निम्नलिखित** **अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अपने वाक्य में प्रयोग लिखिए :** **1**

(i) काश (ii) के पास ।

उ. (i) काश ! मोहित आ जाता |

(ii) गाडी के पास कोई खड़ा था |

3. **कृति पूर्ण कीजिए :** (दो में से कोई एक) 1

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि-भेद
………. . . .	दुः + लभ	……………….

उ.

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि-भेद
दुर्लभ	दुः + लभ	विसर्ग संधि

अथवा

दिग्गज	……. + ………	……………….

उ.

दिग्गज	दिक् + गज	व्यंजन संधि

4. **निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक सहायक क्रिया को पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए :** **1**

(i) रमजानी चुप खड़ी आगंतुक की बातें सुनती रही।

(ii) रूपा का हृदय सन्न हो गया ।

सहायक क्रिया	मूल रूप
………………………	………………………

उ.

सहायक क्रिया	मूल रूप
(i) रही	रहना
(ii) गया	जाना

5. **निम्नलिखित में से किसी एक क्रिया का 'प्रथम' तथा ' द्वितीय ' प्रेरणार्थक रूप लिखिए:** 1

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) देना	------------------------	------------------------
(ii) रोना	------------------------	------------------------

उ.

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) देना	दिलाना	दिलवाना
(ii) रोना	रुलाना	रुलवाना

6. **निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :** 1

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
(i) मुँह लटकाना	------------------------	------------------------
(ii) कलेजे में हूक उठना	------------------------	------------------------

उ. (i) मुँह लटकाना - अर्थ: निराश होना।
वाक्य: मनचाहा खिलौना न मिलने पर बच्चा मुँह लटकाकर बैठ गया।
(i) कलेजे में हूक उठना - अर्थ मन में वेदना उत्पन्न होना।
वाक्य: बाढ़ में फँसे हुए लोगों की हालत देखकर कलेजे में हूक उठ गई।

अथवा

अधोरेखित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए:
(दाद देना, बोलबाला होना)
आजकल के युग में विज्ञापन का बहुत प्रभाव है।

उ. आजकल के युग में विज्ञापन का बोलबाला है |

7. **निम्नलिखित वाक्य पढ़कर प्रयुक्त कारकों में से कोई एक कारक पहचान कर उसका भेद लिखिए:** 1

(i) जीवन निर्वाह या धन कमाने के लिए अनेक व्यवसाय चल रहे हैं।
(ii) दिल में ठेस लगी है।

कारक चिह्न	------------------------
कारक भेद	------------------------

उ.

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) के लिए	संप्रदान
(ii) में	अधिकरण

8. **निम्नलिखित वाक्य में यथास्थान उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :** 1

वाह वाह ! खूब सोचा आपने.

उ. वाह वाह ! खूब सोचा आपने!

9. **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :** 2

(i) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया। (सामान्य वर्तमानकाल)

(ii) छापामारों ने कवि से क्षमा माँगी थी। (सामान्य भूतकाल)

(iii) दिल्ली शहर में घर ढूंढ़ रहा हूँ। (अपूर्ण भूतकाल)

उ. (i) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आता है ।

(ii) छापामारों ने कवि से क्षमा माँगी।

(iii) दिल्ली शहर में घर ढूंढ़ रहा था ।

(10) (i) **निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर वाक्य का प्रकार पहचानकर लिखिए:** 1

हमने गहने पहनने छोड़ दिए थे।

उ. (i) सरल वाक्य

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए : वाक्य परिवर्तन कीजिए :** 1

(1) गाय ने दूध देना बंद कर दिया। (विस्मयार्थक वाक्य)

(2) तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए। (आज्ञार्थक वाक्य)

उ. (1) अरे ! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

(2) तुम अपना ख्याल रखो ।

(11) **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए** 2

(i) सिरचन को कोई लड़का - बाला नहीं थे ।

(ii) तख्त के रखे जाने का आवाज आता है।

(iii) उस दिन शाम का वक्त झील किनारे टहल रहे थे।

उ. (i) सिरचन के कोई लड़के बाला नहीं थे।

(ii) तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।

(iii) उस दिन शाम के वक्त झील किनारे टहल रहे थे।

विभाग 5 : रचना विभाग (उपयोजित लेखन) 26 अंक

5.(अ) **(1) पत्र लेखन :**

• निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र लेखन कीजिए: 5

अमेय / अमेया साठे, डोंगरे वसतिगृह, नाशिक से अपने छोटे भाई सुमेध साठे, 3/37, जैन कॉलनी, जळगाँव को पढ़ाई का महत्त्व समझाते हुए पत्र लिखता / लिखती है।

उ. 10 सितंबर, 2019

प्रिय सुमेध,

खुश रहो।

मैं यहाँ सकुशल हूँ। तुम कैसे हो? कुछ दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला चिंता हो रही हैं। पिता जी का पत्र आया था। उससे तुम्हारे बारे में जानकारी मिली। पता चला कि आजकल तुम अपनी पढ़ाई पर पहले जैसा ध्यान नहीं दे रहे हो। सुमेध ! यह अच्छा नहीं है। यह आजकल तुम्हारी बिगड़ी हुई संगति का परिणाम है। इसलिए तुम्हारा ध्यान पढ़ाई से हटकर शरारतें करने में लग गया लगता है।

सुमेध, क्या तुम यह नहीं जानते कि जीवन में शिक्षा का क्या महत्त्व है। इसकी जानकारी तुम्हें बड़े होने पर होगी। सुमेध, शिक्षा प्राप्त करने की यही उम्र है। यदि तुमने यह समय निरर्थक कामों में गँवा दिया, तो बाद में पछताओगे। बिना शिक्षा के

मनुष्य को न ज्ञान की प्राप्ति होती है न उसे कोई सलीका ही आता है। वह अच्छे-बुरे में भेद भी नहीं कर सकता। यदि तुम पढ़ाई में ध्यान नहीं दोगे, तो तुम कैसे आगे बढ़ पाओगे!
पिता जी चाहते हैं, तुम पढ़-लिखकर बड़े अफसर बनो। तुम अपना समय गँवाओगे,
तो पिता जी की इच्छा कैसे पूरी होगी।
आशा है, मेरी बातों पर ध्यान दोगे और मेहनत से पढ़ाई करोगे।
तुम्हारा शुभचिंतक,
अमेय साठे,
डोंगरे वसतिगृह,
नाशिका
xyz@abc.com

अथवा

राधा / राधेव पाटील, आदर्श विद्यालय, क्रीडा प्रतिनिधि, कोल्हापुर से मा. व्यवस्थापक, शक्ति स्पोर्ट्स, लक्ष्मी रोड, पुणे को पत्र लिखकर अपने विद्यालय के लिए सामग्री / साहित्य की माँग करती / करता है।

उ. 10 अगस्त, 2019
प्रति,
मा. व्यवस्थापक.
शक्ति स्पोर्ट्स,
लक्ष्मी रोड,
पुणे-411002

विषय: विद्यालय के लिए खेल सामग्री मँगाना ।

महोदय,
मैं कोल्हापुर के आदर्श विद्यालय का क्रीडा प्रतिनिधि हूँ। मुझे अपने विद्यालय के लिए खेल सामग्री की आवश्यकता है। यह पत्र प्राप्त होते ही कृपया निम्नलिखित खेल सामग्री मेरे विद्यालय के पते पर भेजने की कृपा करें। आपके नियमों के अनुसार 1,000 रुपयों का डिमांड ड्राफ्ट पेशगी इस पत्र के साथ भेजा जा रहा है। शेष रकम का बिल सामान के साथ भेज दीजिए। बाकी पैसे आपके अकाउंट में आनलाइन ट्रांसफर कर दिए जाएँगे।

खेल सामग्री

(1) हेल्मेट – 2
(2) माउथ गार्ड – 12
(3) नेकगार्ड -2
(4) शोल्डर पैड्स -12 (जोड़ी)
(5) एल्बो पैड्स – 12
(6) पैंट्स - 12
(7) टी-शर्टस् - 12
(8) हॉकी सोक्स 12 (जोड़ी)
(9) टेनिस शूज - 12 (जोड़ी)
(10) हॉकी स्टिक्स - 16

आशा है, यह खेल सामग्री आप शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे।

भवदीय,
राधेय पाटील (खेल प्रतिनिधि),
आदर्श विद्यालय, कोल्हापुरा
xyz@abc.com

(2) **निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर परिच्छेद में एक-एक वाक्य में हों** 4

दार्जिलिंग का पुराना नाम दोर्जीलिंग था। सदियों पहले यह एक छोटा सा गाँव था। चाय के शौकीन अंग्रेजों ने इस क्षेत्र की आबोहवा को चाय की खेती के योग्य पाकर यहाँ चाय बागान विकसित किए। हैप्पी। वैली टी इस्टेट से निकलकर हम हिमालय पर्वतारोहण संस्थान पहुँचे। हिमालय के शिखरों को छू लेने की चाह रखने वालों को यहाँ पर्वतारोहण का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसकी स्थापना एव्हरेस्ट पर पहली विजय के बाद की गई है। शेरपा तेनसिंह लंबे अरसे तक इस संस्थान के निदेशक रहे। संस्थान में एक महत्त्वपूर्ण संग्रहालय भी है। इसमें पर्वतारोहण के दौरान उपयोग में आने वाले नए-पुराने उपकरण, पोशाकें, कई पर्वतारोहियों की यादगार वस्तुएँ और रोमांचक चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। इसके निकट ही स्थित है ' 'पद्मजा नायडू हिमालय चिड़ियाघर' जो बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी बहुत पसंद आता है। पर्वतों पर रहने वाले कई दुर्लभ प्राणी यहाँ देखने को मिलते हैं।

उ. गद्य आकलन

तैयार किए हुए प्रश्न :

(i) दार्जिलिंग का पुराना नाम क्या था?
(ii) हिमालय पर्वतारोहण संस्थान की स्थापना कब की गई थी?
(iii) अंग्रेजों ने दार्जिलिंग क्षेत्र में क्या विकसित किए?
(iv) 'पद्मजा' नायडू हिमालय चिड़ियाघर' की क्या विशेषता है?

5. (आ)

(1) वृत्तांत लेखन : 5

प्रगति विद्यालय, अमरावती में मनाए गए 'हिंदी दिवस समारोह का लगभग 70 से 80 शब्दों में वृत्तांत- लेखन कीजिए।

(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है ।)

उ. **वृत्तांत-लेखन :**

हिंदी दिवस पर शानदार समारोह

अमरावती, 15 सितंबर, 2019: कल यहाँ के प्रगति विद्यालय में सुबह 9 बजे हिंदी दिवस का शानदार आयोजन किया गया। शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समारोह की अध्यक्षता शहर के वयोवृद्ध साहित्यकार रंगनाथ कालेलकर ने की।

विद्या की देवी सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर सरस्वती चंदना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम विद्यालय के मुख्याध्यापक श्रीनाथ पाध्ये ने माननीय अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया और अपने विद्यालय में हिंदी संबंधी गतिविधियों की जानकारी दी। मुख्याध्यापक के अनुरोध पर अध्यक्ष महोदय जे हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, हिंदी अंत्याक्षरी प्रतियोगिताओं तथा हिंदी परीक्षाओं में प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया।

श्री कालेलकर ने हिंदी भाषा के अध्ययन में अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया तथा उन्हें बधाई दी। इसके बाद उन्होंने हिंदी भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उन्होंने हिंदी भाषा की लोकप्रियता और उसके व्यापक प्रचार-प्रसार पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

विद्यालय के कुछ छात्रों ने हिंदी के प्रसिद्ध कवियों की कविताओं का पाठ किया।

अंत में उपमुख्याध्यापक ने माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का आभार प्रकट किया। राष्ट्रगीत के साथ दोपहर बारह बजे हिंदी दिवस का यह शानदार समारोह समाप्त हुआ।

अथवा

कहानी – लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए।

एक लड़की -- अपना जन्मदिन अलग तरीके से मनाना -- अपने लिए कुछ न लेना – दूसरों को बाँटना - खुशी का अनुभव करना ।

उ. **बाँटने की खुशी**

निशा संपन्न घर की लड़की थी। उसके पिता बड़े व्यापारी थे और उसकी माँ एक स्कूल की संचालिका थीं। निशा के घर में नौकर-चाकर और सभी तरह की सुख- सुविधाएँ थीं। उसकी सहेलियाँ भी उसी की तरह संपन्न परिवारों से थीं। निशा का विद्यालय उसके घर से काफी दूर था। उसकी अपनी कार का ड्राइवर गाड़ी से उसे स्कूल छोड़ने जाता था।

जिस सड़क से होकर उसका ड्राइवर गाड़ी ले जाता था, उसके किनारे एक झोपड़पट्टी थी। वह देखती झोपड़पट्टी के छोटे-छोटे बच्चे खाने-पीने की चीजों के लिए आपस में झगड़ते और छीना-झपटी करते थे। इन बच्चों का यह दृश्य वह रोज जाते-आते देखती थी।

दीपावली आने वाली थी। दीपावली के तीसरे दिन ही तो उसका जन्मदिन था। वह हर बार नए ढंग से अपना जन्मदिन मनाती थी। उसने अपनी सहेलियों से भी पूछा। सबने अपने-अपने ढंग से कुछ न कुछ सुझाव दिया। तभी उसके मन में एक

विचार आया।

उसने अपने माता-पिता की अनुमति से अपनी गुल्लक में जमा पैसों से खाने-पीने की तरह-तरह की चीजें, कुछ कपड़े और खिलौने आदि खरीदे। बाजार से लौटते हुए ड्राइवर से झोपड़पट्टी के पास गाड़ी रोकने के लिए कहा। उसने झोपड़पट्टी के सभी बच्चों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "बोलो, हैप्पी बर्थ डेटुयू। बच्चों ने वैसा ही किया।

निशा ने बाजार से खरीदा हुआ सारा सामान इन गरीब बच्चों में बाँट दिया और उनके साथ अपना जन्मदिन मनाया। इस बार निशा को जन्मदिन मनाने की जो खुशी हुई वह निराली थी। यह जन्मदिन पर कुछ पाने की नहीं दूसरों को बाँटने की खुशी थी।

सीख पाने से ज्यादा देने में खुशी होती है।

2) **विज्ञापन-लेखन :**

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए ः 5

सुमंगल यात्रा कंपनी	संपर्क
विशेषताएँ	ई-मेल

उ. **विज्ञापन-लेखन :**

क्या आप

- तीर्थयात्रा पर जाना चाहते हैं?
- पर्वतीय स्थलों पर जाने की योजना बना रहे हैं?
- काश्मीर, ऊटी, दार्जिलिंग के प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेना चाहते हैं?

तो फिर देर क्यों?
हम हैं ---
सुमंगल यात्रा कंपनी

हमारी विशेषताएँ:
- पंच सितारा होटल में निवास
- यातायात की उत्तम व्यवस्था
- यात्रा के दौरान हमारा गाइड सदा आपके साथ

आजही संपर्क करे-
सुमंगल यात्रा कंपनी,
312, यशवंत चव्हाण रोड,
मानगाँव, रायगड (महाराष्ट्र)
मोबाइल नं. XXX3535XXX
EMail: XXX@abc.com

5. (इ) **निबंध – लेखन** 7

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए ः

(1) टेलीफोन (दूरभाष) की आत्मकथा ।

उ. **टेलीफोन की आत्मकथा**

ट्रिन .... ट्रिन .... ट्रिन ....! ...! अरे, उठाओ न मेरा रिसीवर क्या तुम अपने इस मोबाइल पर ही लगे रहोगे!"
तुम मेरी यह पारंपरिक आवाज सुनकर चौंक गए न! चौंकना स्वाभाविक भी है। क्योंकि अब तो मैं किसी-किसी घर में ही पाया जाता हूँ। लेकिन अभी ज्यादा दिन नहीं हुए, जब मैं लगभग हर घर में पाया जाता था। तब लोग मुझे अपने घर में रखना अपनी शान, अपनी प्रतिष्ठा समझते थे।

सुनो तो, अपने जमाने में मेरी बहुत माँग थी। अरे, शुरू-शुरू में मुझे पाने के लिए सालों-साल का इंतजार करना पड़ता था। उस समय जिनके पास में होता था, उनके नाम और पते टेलीफोन डाइरेक्टरी में छपा करते थे। अधिकांश लोग मुझे इस डाइरेक्टरी पर ही रखते थे।

मेरा बड़ा सम्मान था। मैं अपनी जगह पर स्थिर रहता था। जिसे फोन करना होता था, उसे फोन करने के लिए मेरे पास आना पड़ता था। तुम्हारे मोबाइल की तरह नहीं कि मैं तुम्हारे साथ गली-गली फिरूँ!

मुझे काम करने के लिए किसी की जरूरत भी नहीं होती थी। बिजली हो या न हो, मैं अपना काम करता रहता। हाँ, मुझमें एक और विशेषता थी। बातचीत के अलावा मुझसे कोई दूसरा काम नहीं लिया जा सकता था जैसे गाना-वाना सुनना।

चलते-चलते बता दूँ, कि मेरा आविष्कार अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने किया था। मैं उनका ऋणी हूँ। उन्होंने मुझे सम्मान से रहना सिखाया था। मैंने जीवनभर लोगों की सेवा की और आज भी सेवा कर रहा हूँ। और चाहिए क्या मुझे!

(2) मेरा प्रिय वैज्ञानिक ।

उ.

मेरा प्रिय वैज्ञानिक

संसार में भिन्न-भिन्न आविष्कार करने वाले एक से बढ़कर एक वैज्ञानिक हुए हैं। सबकी उपलब्धियों का अपना-अपना महत्त्व है, परंतु जिस वैज्ञानिक की उपलब्धियों ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया है, उसका नाम है थामस अल्वा एडिसन।

एडिसन का जन्म 11 फरवरी, 1847 को अमेरिका के ओहियो राज्य के मिलन नगर में हुआ था। बचपन से ही उनका स्वभाव जिज्ञासु था।

वैज्ञानिक प्रयोगों की धुन भी उन्हें बचपन से ही थी। स्कूल की पढ़ाई में मन न लगा, तो माँ के प्रोत्साहन से वे घर में ही छोटे-छोटे प्रयोग करने लगे। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने ट्रेन में अखबार बेचना शुरू किया। प्रयोगों का भूत वहाँ भी उनके सिर से न उतरा। ट्रेन का डिब्बा ही उनकी प्रयोगशाला बन गया।

धीरे-धीरे एडिसन के प्रयोग सफल होने लगे। उन्होंने उस समय प्रचलित तार-यंत्र में कई सुधार किए। टेलीफोन का मूल आविष्कार तो ग्राहम बेल ने किया था, पर उसमें कुछ कमियाँ थीं। वे कमियाँ एडिसन ने दूर की टेलीफोन को वर्तमान रूप देने वाले एडिसन ही थे। ट्रेनों का समय दर्शाने वाला इंडीकेटर भी उन्होंने बनाया था। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार है बिजली के बल्बों में विद्युतधारा प्रवाहित करना। जिस विदयुत ने आज हमारे जीवन में तरह-तरह की सुविधाएँ प्रदान की है, उसके आविष्कार का सारा श्रेय एडिसन को ही है। मनोरंजन की दुनिया में क्रांति लाने वाले सिनेमा के प्रोजेक्टर का आविष्कार भी एडिसन ने ही किया था।

एडिसन के आविष्कारों से हमें अनेक सुख-सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जिसमें उनका योगदान न हो। उन्होंने छोटे-बड़े लगभग 1300 आविष्कार किए हैं। अपने आविष्कारों के द्वारा इस युग पर उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इसीलिए वे मेरे प्रिय वैज्ञानिक है।

एडिसन के जीवन का सबसे बड़ा संदेश है निरंतर परिश्रम। वे मानते थे कि उनकी सफलता में प्रतिशत हिस्सा भाग्य का और 99 प्रतिशत हिस्सा उनके कठोर परिश्रम का है।

सचमुच, एडिसन एक महान वैज्ञानिक थे। 18 अक्तूबर, 1931 को 84 वर्ष की उम्र में विज्ञान के इस जादूगर ने विश्व से सदा के लिए विदा ली। उनकी शवयात्रा में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्र प्रमुख आइजन हूवर भी शामिल हुए थे।

(3) भ्रष्टाचार ।

उ.

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार ने हमारे समाज और देश में अपनी जड़ें गहरे तक जमा ली हैं। आज भ्रष्टाचाररूपी दैत्य के आगे सभी असहाय बन गए हैं।

भ्रष्टाचार का अर्थ है, दूषित आचरण या बेईमानी। आज यह बेईमानी जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई देती है। सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालय भ्रष्टाचार से अधू नहीं हैं। बड़े-बड़े सरकारी कर्मचारी व्यापारी तथा नेतागण भी भ्रष्टाचार के घेरे में है।

भ्रष्टाचार फैलने का एक कारण है, हमारे देश की चुनाव-पद्धति। चुनाव जीतने के लिए प्रत्याशी को पानी की तरह पैसा बहाना पड़ता है। चुनाव में सफल होते ही वह खर्च की गई धनराशि किसी भी तरह से प्राप्त करने के लिए अधीर हो उठता है। उसकी यह अधीरता भ्रष्टाचार को जन्म देती है।

भ्रष्टाचार फैलने का दूसरा कारण है, भौतिकवादी जीवन-पद्धति। आज हमारे देश में अमेरिका और पश्चिमी देशों की अंधाधुंध नकल करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लोग सांसारिक सुख-सुविधाओं को धर्म और सदाचार से भी अधिक महत्त्व देने लगे हैं। चारों तरफ से धन बटोरने के लिए लोग धोखाधड़ी, छल-कपट आदि सभी प्रकार के अनुचित उपायों का सहारा लेते हैं।

आज भ्रष्टाचार हमारे राष्ट्रीय जीवन के लिए घोर अभिशाप बन गया है। राशन कार्ड बनवाने, यात्रा के लिए रेल टिकट-आरक्षण करवाने जैसे छोटे-छोटे कामों के लिए भी रिश्वत अनिवार्य हो गई है। शिक्षा के पवित्र क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार ने अपने पैर पसार लिए हैं। रातोरात धनवान बनने के लिए तस्करी करने में भी लोगों को संकोच नहीं होता। नशीले पदार्थों का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है। देश को यह -दिखाने का दम भरने वाले नेता भी भ्रष्टाचार के दलदल में धँसे हुए हैं। कानून और व्यवस्था लागू करने वाले लोग भ्रष्टाचारियों के हाथ के खिलौने बने हुए हैं। देश का युवावर्ग भ्रष्टाचारी व्यक्तियों की तड़क-भड़क देखकर उन्हें ही आदर्श मानता और उनका अनुकरण करता है।

यदि हम अपने इस महान राष्ट्र को दुनिया के प्रथम श्रेणी के राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें आत्मनिरीक्षण करना होगा। यदि हमारे जीवन में लेशमात्र भी भ्रष्टाचार हो, तो उसे तुरंत दूर कर देना होगा। इसके बाद यदि हम दृढ़तापूर्वक भ्रष्टाचार निवारण का कार्य हाथ में लेंगे, तो उसे नष्ट करने में आवश्य सफल होंगे

****